KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJECBM/ OCT-DEC (2017)/VOL-4/ISS-4/A3 PAGE NO.10-13
ISSN: 2348-4969 IMPACT FACTOR (2017) – 7.8902
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

समाजवादी चिंतक यादवेंद्र शर्मा चंद्र

[1]DR.CHAMKAUR SINGH
[1]Asst. prof., PG Dept. of Hindi, Guru Nanak College, killianwali
Muktsar sahib, Punjab

"समाज की भावनाएं ही लेखनी–बद्ध होकर साहित्य की संज्ञा प्राप्त करती है, साहित्य मानव जीवन की व्याख्या या आलोचना है।"[1] यादवेन्द्र ने अपने जीवन व परिवेश के समाज का मर्मस्पर्शी एंव यथार्थ चित्रण अपने उपन्यासों में किया "प्रत्येक समाज की सभ्यता, संस्कृति, बौद्धिक–गरिमा, अर्थव्यवस्था, वैज्ञानिक प्रगति, रुढ़ि–परम्पराओं की स्थिति और भावी बहुमुखी योजनाओं का प्रतिबिम्ब उसका साहित्य ही होता है"[2] यादवेन्द्र जी ने अपने लेखन से राजस्थानी परिवेश की समस्याओं (निरन्तर अकाल, अभाव एंव रोटी की समस्या, विविध अंचलो में बसने वाले गरीब एंव पिछडे समाज के दलित, उपेक्षित, अछूत समझे जाने वाले व्यक्तियों की मनोदशा को उभारा है। "श्रेष्ठ साहित्यकार की संवेदनशीलता सामाजिक समस्याओं से मुंह नहीं मोड़ सकती"[3] यादवेन्द्र ने अपने मारवाड़ी समाज की समस्याओं को अपनी रचनाओं मे सशक्त रुप से चित्रित किया है। यादवेन्द्र के उपन्यासों में प्रदेश जाने वाले मध्यम व धनिक वर्ग के व्यक्तियों के सामाजिक जीवन का सूक्ष्म अंकन मिलता है। इस धनिक सेठों की स्त्रियां यहां सेठानी होने का सुख भोगती हैं वहीं अपने प्रियतम के बिना सारी जिन्दगी अकेली, पिया बिन सेज के भोगती हैं। इन स्त्रियों को शारीरक सुख से ज्यादा मानसिक दुख अधिक तड़पाता रहता है। यादवेन्द्र के उपन्यास इन सेठानियों के मार्मिक चिंतन से भरे पडे हैं।

यादवेन्द्र का उपन्यास 'नया इन्सान' समाज की एक विकृत संकल्पना को उभारु है। सामाजिक सन्दर्भो में नारी की करुपता ही सबसे बड़ा अभिशाप बन जाता है। उपन्यास की पात्र 'अमृत' जो कि रुप वति है, जो 'अशेष' का प्यार चाहती है, लेकिन दुर्घटनावश करुप हो जाने पर वह 'अशेष' द्वारा तिरस्कृत होती है। यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ने इसी उपन्यास में स्त्री–पुरुष सम्बन्धों की मौलिक अभिव्यक्ति की है, प्रसंग देखिए– विवाह के बाद, ये पुरुष, घोडी और औरत के बीच इतना ही फर्क समझते हैं कि एक को चाबुक के जरिये दूसरी को चपत के जरिये या फिर घूंसों के जरिये।" उपन्यास 'चूनर की पीड़ा' में यादवेन्द्र जी ने मारवाडी समाज की पूंजी के प्रति सम्मोहन को प्रदर्शित कर दिखाया है कि पूंजी के प्रति इतनी तन्मयता है कि वे अपनी संस्कृति, सभ्यता, पारिवारिक सुख–दुख और जीवन के आनन्द को देखने की फुर्सत नहीं है। उसमें अर्थलिप्सा, धर्म के नाम पर ढोगं, कुप्रथाओं का जोर, मारवाड़ी समाज की जड़ स्थिति का अंकन है। उसी उपन्यास में 'धुडिया' शराब के नशे में अपनी पत्नी 'जोखड़ी' को अन्ट–शन्ट बकते हुए कहता है कि –"तू साली! मानेगी नहीं, ले रांड, कुत्ती कहीं की।" जोखडी मार खाती हुई कहती है– "इस हरामजादे को देखो, मुझे मार रहा है, जीवन भर कमाके खिलाने का बदला दे रहा है।"[4]

उपन्यास 'जग की रीत' में यादवेन्द्र ने पारिवारिक समस्याओं को आधार बनाकर रचना की है। पारिवारिक विघटन, परिवारों के सदस्यों के मतभेद, परम्पराओं, आस्था आदि कथानक के आधार है। यह उपन्यास एक कौटुम्बिक समस्या मूलक उपन्यास है। इसमें आधुनिक विचारों की युवती 'पार्वती' वैधव्य जीवन के परम्परागत बन्धनों को तोड़कर पुनर्विवाह कर क्रान्तिकारी उदाहरण प्रस्तुत करती है जो अनुकरणीय है। इस उपन्यास मे यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ने पात्र के माध्यम से पूंजीपतियों में दिल, करुणा एंव दया का अभाव दिखाया है, –"जिनकी रगों में नारी के प्रति अविश्वास भरा हो, वे नारी को हँसते कैसे देख सकते हैं ? वे नारी को एक ही दृष्टि से देखते हैं –स्त्री और पुरुष, अपवित्र सम्बन्ध।"[5] 'विद्रोहिणी' उपन्यास पूंजीवादी तंत्र में नारी के वस्तुवादी रुप का गहन चित्रण है। समाज में बदलते मूल्यों व संसकारों मे विद्रोह करती नायिका 'सन्नों' सुख–दुख भोगती है। 'भँवर' अपनी पत्नी 'सन्नों' से कहता है –"तुम्हे मेरे मन के मुताबिक बनना ही पडेगा। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझसे कन्धे से कन्धा मिला कर चलो। मेरे साथ रहो, घूमों–फिरो और जैसा मैं चाहूं, वैसा करो।"[6] सन्नों का पति उसे शराब पिलाता है, सिगरेट पिलाता है, अपने बाँस को खुश करने हेतु उसे बिस्तर सांझा करने को कहता है। यहां तक कि उसे मुखीराम की रखैल तक बना देता है, भंवर का मानना है कि आज के समय में वही आदमी खुश है जिसके पास

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

पैसा है, फिर चाहे वो चोरी कर के ही कमाया हो। परिणामस्वरुप 'सन्नो' अपने पति की कृपाकाँक्षी बन जाती है, वैश्या की तरह शराब पिलाती है, जो पति हुकम करता है वहीं करती है। ऐसे समाज की मूक गाय–नारी केवल नर के संकेत पर चलने वाली एक मशीन बन जाती है।

महानगरीय जीवन में विघटित होते जीवन मूल्यों को प्रदर्शित करता उपन्यास है 'राहें अलग–अलग' इस उपन्यास के माध्यम से महानगरीय खोखलेपन को दर्शाया है। रोशनी की चमक दमक में दूर से मानवीय रिश्तों, प्यार की भावनाओं के स्थान पर स्वार्थ लिप्सा की भावना प्रधान है। महानगरीय जीवन हर किसी वस्तु का मान दण्ड लाभ–हानि पर ही आधारित होता है। महानगरीय मनुष्य में संवेदनशीलता की जगह संवेदनशून्यता घर कर गई है। उपन्यास मे 'दादी मां' 'देव' को कहती हैं– "ये पुरुष अत्यन्त ही गन्दे स्वार्थ से लिप्त होते हैं। स्त्री जाति पर ये सदा से अन्याय, अत्याचार करते आये हैं।"[7] इस उपन्यास में मनुष्य का जिन्दगी को पूर्णत! यान्त्रिक संवेदनाहीन, अर्थ एंव काम के कीड़े के रुप में चित्रत किया है। यादवेन्द्र का उपन्यास 'प्रोफैसर' समाजिक मनौविज्ञान पर आधारित है। यादवेन्द्र ने इस उपन्यास में सामाजिक समस्याओं को बौद्विक स्तर पर उठाया है। 'गुनाहों की देवी' उपन्यास में वैश्या पात्र के माध्यम से समाज का यथार्थ चित्रण हुआ है। गवरा, वीणा को कहती है– "गोशत को नोचने वाले गिद्धों का यह बाज़ार है। आदमी इन मोहल्लों में आते ही जानवर बन जाता है, हौसले वाली लड़कियां भी कभी–कभी यहां की आबो हवा से घबरा जाती है"।[8]

लेखक 'दुर्गा' के माध्यम से चकलों का वर्णन करता है –"रानी, यह इन्द्र का अखाड़ा है। यह खूबसूरती का बाज़ार है। यहां लोग चांदी के सिक्के देकर हमारी जवानी को खरीदते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम यहां नहीं आते, यहां आते हैं, कुत्ते, जो शहर में पूंछ हिलाते फिरते हैं, मूंह में रोटी की जगह नोटों का बंडल लिये।"[9] औरत के दर्द को सुनाती सुचित्रा, भगवान से कहती है–"उसे भगवान कुतिया बना देना पर रंडी नहीं। क्योंकि कुतिया बन कर वह आज़ाद तो रह सकेगी।"[10] नारी की मार्मिक व्यथा का चित्रण करने वाला उपन्यास है –'सावित्री' सावित्री अपनी मान मर्यादा की रक्षा हेतु जान देने से भी नहीं चूकती। धर्म, मर्यादा, इज्ज़त, परम्परायें उसके लिए सर्वोपरि हैं। हृष्ट–पुष्ट बनने की चाहत लिये अपने पति के ब्रह्मचर्य व्रत पालन पर वह कहती है– "नहीं–नहीं यह जुल्म है, मैं आपसे अलग अलग नहीं रह सकती, आप भरोसा रखें, मैं अपनी छाती पर पहाड़ रख लूंगी पर इज्जत के बाहर का काम नहीं करुँगी। मेरा नाम सावित्री है, मैं अपने नाम पर कभी भी कलंक नहीं आने दूंगी।"[11]

सावित्री की पारिवारिक पीड़ा की कहानी पारिवारिक उत्सर्ग, समाज सेवा, त्याग और क्षमाशील सच्चरित्र नारी की कहानी बन जाती है। 'एक कमरे की कहानी' उपन्यास आज के बदलते जीवन और विवशताओं से घिरे इन्सानों की सच्ची कहानी है। इस उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार की देश विभाजन से लेकर वर्तमान युग तक की विडम्बनाओं का सजीव चित्रण है। इस उपन्यास में पात्रों की पैसा कमाने के लिए अपनी मान मर्यादा को ताक पर रखने की मानसिक्ता को दिखाया है। ऐसी मानसिक्ता के पीछे कहीं न कहीं मध्यवर्गीय परिवारों की आर्थिक दशा भी काम करती है। 'त्रिलोचन' की बीमा ऐजेन्ट की नौकरी छूट जाने पर उसकी पत्नी इन्दिरा अपनी ननद रुपा को वैश्या बनाकर पैसा कमाने का जरिया बनाती है, तथा अपने पति को शराबी बना देती है। रुपा अपनी जिन्दगी से तंग आकर आत्महत्या कर लेती है तथा अपनी छोटी बहन रमा के नाम खत छोड़ जाती है कि वह उसकी तरह कॉलगर्ल न बन कर अपनी सही जिंन्दगी की शुरुआत करे। बहन की मौत ने त्रिलोचन को बदल डाला। उसने मेहनत कर दुकान खोली तथा सच्चे आनन्द की प्राप्ति की। इन्ही सामाजिक व मानसिक स्थितियों को दर्शाता है यह उपन्यास यादवेन्द्र शर्मा ने 'कलियां मेरे देश की' उपन्यास में उन हजारों युवतियों मे विवश जीवन के यर्थाथ चित्रण किया है, जो दफ़्तरों में सूट–बूट से लेस भेडियों के जंगली पन का शिकार होती है। लेखक लिखता है कि हमारे देश की कलियां पूरी तरह खिलने से पूर्व ही जंगली भालू, सूअरों, रीछों द्वारा कुचल दी जाती हैं। परिस्थितियों के वश इन्हें न चाहते हुए भी इनकी काम इच्छाओं की पूर्ति हेतु इनके सामने नतमस्तक होना पडता है। आधुनिक युग के मनुष्यों के मुखोटों को उतारता है यादवेन्द्र शर्मा का उपन्यास 'अग्निपथ'। लेखक के अनुसार आधुनिक जीवन अग्निपथ है, जिस पर चल पाना सभी के वश की बात नहीं। अधिकतर लोग इस युग में अपने जीवन को मात्र लाश की भांति ढोते रहते हैं। उपन्यास की नायिका 'मालती' जो कि मैडीकल कॉलेज में पढ़ती है, और प्रबोध तथा हेम से प्रेम सम्बन्ध स्थापित करती है, लेकिन परिस्थितियों के परिणाम स्वरुप प्रेमी हेम के झील में डूब कर मर जाने पर मजबूरी वश बदशक्ल इन्सान से शादी करनी पड़ती है। मालती फिर भी हालातों से समझौता करना चाहती है लेकिन तभी अपने पति के सेक्रेटरी की तरफ आकर्षित हो जाती है, उससे भी धोखा मिलने पर अपने पति से तलाक ले लेती है। प्राध्यापिका के पद पर रहते अपनी इच्छाओं के दम पर जीते हुए मालती अनेकों मर्दो से शारीरक सम्बन्ध बनाती है। ऐसी स्थिति मे उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा को आघात पहुंचता है, तथा उसकी सहेली सोनिया उससे नफरत करने लगती है। सोनिया मालती को कहती है कि समाज में मालती के बारे कोई अच्छी राय नहीं है– तो मालती सोनिया को कहती है– "जिस सभ्य समाज का तुम दंभ भरती हो वही तो मेरे साथ एक क्षण व्यतीत करने के लिए आकुल रहता है। सच तो यह है कि हम एक झूठा दम्भयुक्त जीवन जीते हैं। हमारे असली चेहरों पर एक मुखौटा है, मैनें उस मुखौटे को उतार फेंका है।" यह उपन्यास समाज की दोगली मनोस्थिति को चित्रित करता है। 'वापसी' उपन्यास जीवन की विचित्रताओं को लक्षित कर लिखा गया है। उपन्यास की नायिका 'सूरजडी' जिसका पति 'भानी' बुरी संगत में पड 'गिरी' का कर्जदार हो जाता है, तथा गिरी के भय से घर से भाग जाता है। 'सूरजडी' मेहनत मजदूरी कर अपने देवर माधो को दफतर मे बाबू बना देती है, एक दिन

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

माधों के नाम तार आता है कि 'भानी नहीं रहा। मौसी माधों से कहती है –"तू उसे सहारा दे, इसमें हर्ज ही क्या है ? कौन सा धर्म बिगडता है ? जिस भौजाई ने तेरे जीवन को इतना सुखी और अच्छा बनाया, क्या उसके प्रति तेरा कोई कर्त्तव्य नहीं ? उसे सहारा देना तेरा धर्म है।"[12] बाबा माधो को कहता है –"जो संभव है और अच्छा है, उसे करने में ही सुख है। जरा उसके अहसानों को याद करो। यदि वह कठोर मेहनत नहीं करती तो क्या तुम आज इस स्थिति में पहुंचते ? दफतर के बाबू बनते ? तुम्हारे समाज में यह गौरव पहली बार इस बस्ती में यानि तुम्हे ही मिला है। क्यो मिला है ? इसका श्रेय सिर्फ तुम्हारी भौजाई सूरजडी को है। माधो! मेरी बात मानो और उससे नाता करके उस पर सचमुच दया करो। वह यही दया मांग रही है।"[13] माधो मानसिक उठा पठक में पडा है, उसे समझ नहीं आ रही कि जीवन के इस मोड़ पर इस समस्या का क्या हल हो, माधो कहता है –"जिस नारी को मैने पूजा, उसे बिस्तर कैसे बनाऊँ।" मौसी कहती है –"वह गरजे तो किसके जोर पर ? आत्मा कांपती है उसकी। आज माधो सहारा दे दे तो किसकी औकात कि उस ओर देख ले।" सूरजडी मौसी से कहती है –"देवर से कह देना मौसी, कि वह सुख से रहे। भौजाई के अहसानों को भूल जाये, भूल क्या जाये, वह तो भूल गया होगा। न भूला होता तो मुझे इस तरह कसाइयों के हाथों नहीं सौपंता।"[14]

लोगो के अत्याचारों से विवश होकर सूरजड़ी माधो के पास आ जाती है और कहती है –"मैं यहां आ गई हूं, सदा–सदा के लिए आ गई हूं। अब वापिस नहीं जाऊंगी" –माधो को समझ नहीं आता कि वह क्या करे, तभी सूरजडी पीठ पर पडे निशान दिखाती हुई कहती है कि देखो पापियों ने मुझे किस तर निर्दयता से पीटा, यदि तुम्हारा भाई जिन्दा होता तो क्या वो मेरा यह हाल होने देता ? भाई मर गया, और अब वो मुझे तुझे सौंप कर गया है। चक्रव्यूह में फंसा माधो मान जाता है। सब कुछ ठीक चलने लगता है, तभी एक दिन भानी वापिस आ जाता है, और कहता है कि गिरी से बचने के लिए झूठा तार भेजा था। मौसी भानी से कहती है–यह आग तूने लगाई है, खोटे करम तुने किये है। इसकी सज़ा भी तुम्हे ही भुगतनी है। भानी वापस रात की गाडी से चला जाता है। यादवेन्द्र का उपन्यास 'पाँव मे आंख वाले' महानगरीय जीवन कला को दिखाता हुआ मनुष्य के प्रदूषित होते जीवन आचरण को लक्षित कर लिखा गया है। महानगरीय जीवन दर्शन पैसे के आगे कुछ नहीं रहा है। महानगरीय मनुष्यों का प्रत्येक क्रिया कलाप पैसे से तोला जा सकता है। और इस आर्थिक सिंकजे में फंसा मनुष्य अपने संसकारो को भूलता हूआ मूल्यहीन होता जा रहा है उपन्यासकार ने भौतिकतावादी व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए आधुनिक समाज को असत्य घोषित किया है। महानगरीय समाज अपनी कमियों को छुपाने के लिए चमक धमक का सहारा लेता है। हर बुराई को पैसों के माध्यम से दबाने की चेष्टा करता है। "महानगर की युवती आकर्षक चेहरा, पाउडर, लिपिस्टिक और कन्धों को चूमते हुए झुमकों से लहक रही है।"[15]

महानगर की सभ्यता हत्यारी है। मनुष्य हदय से दूर, मौलिकता के नजदीक हो गया है। इस लिए मनुष्य की आखें पावों मे आ गई है अब मनुष्य की दृष्टि सतही हो गई है, संवेदनाहीन। महानगरीय मनुष्य को बेईमानी नाम की भंयकर बिमारी ने घेर लिया है। महानगरीय प्रत्येक मनुष्य चाहे वो अमीर हो चाहे गरीब, स्त्री–पुरुष, नेता–अधिकारी, सभी इस बिमारी से ग्रसत है। महानगरीय जीवन अंदर के साथ–साथ बाहर से भी प्रदूषित हो चुका है। रात को साफ आसमान दिखाई नहीं देता। सुबह ताज़ी हवा महसूस नहीं होती। यहां चांदनी भी धूआ ओढ़ कर पसरती है। महानगर की घुटन से त्रस्त मनुष्य ताजी हवा के लिए खिड़की खोलता है तो मिलती है बासी हवा। जीवन की इन्ही मारक स्थितियों का मार्मिक एंव व्यंग्यपूर्ण चित्रण इस उपन्यास की विशेषता है।'चेहरे मत उतारो' उपन्यास में उपन्यासकार ने प्रमोद, अभय, प्रकाश, राखी, शालिनी, लावण्य के माध्यम से महानगरीय उन चेहरों से परिचित करवाया है जो समय–समय पर अपनी सुविधा अनुसार बदलते रहते है। लेखक कहता है, महानगरीय जीवन मुखोटों का समाज है, यहां पर हर मनुष्य अपने वास्तविक चेहरों पर कई–कई मुखोटे लगाये रहते हैं। यहां पर वास्तविक चेहरा पहचान पाना बहुत मुशिकल हो जाता है। महानगरों में वास्तविक चेहरों के अभाव के कारण मनुष्यों के जीवन में मूल्यों का विघटन, खालीपन, संत्रास, घुटन जैसी प्रवृतियाँ दिखाई देने लगती हैं।

'तलाक दर तलाक' उपन्यास का मनुष्य सामाजिक तथा आर्थिक बन्धनों में बंध कर जीवन की मूल प्रवृतियों से कट चुका है। उपन्यास का पात्र रामरिख सामाजिक थपोडों से समझता है कि समाज में जीने के लिए आर्थिक सम्पन्नता अनिवार्य है। रामरिख मेहनत कर सम्पन्न तो बन जाता है। लेकिन एक गलती कर जाता है, वो इस बात को समझ पाने से रह जाता है कि जीवन को सुखमय बनाने के लिए मात्र धन की जरुरत नहीं होती, वरन् सामाजिक सम्बन्धों रीति रिवाजों को मानते हुए ही सुखमय जीवन जीया जा सकता है। रामरिख मात्र धन को ही सर्वस्व मानने लगता है, जिसका परिणाम उसके पारिवारिक जीवन पर पड़ता है परिणाम स्वरुप रामरिख तीन पत्नियों को तलाक देता है। यह हमारे समाज की विड़म्भना है कि जब इन्सान पारिवारिक बनना चाहता है तब अर्थिकता के कारण पारिवारिक जीवन में टूटन आ जाती है। रामरिख अपने जीवन में जिन्दगी की उलझनों से हार कर जीवन जीतने की रेस से बाहर ही जाता है और सामाजिक जीवन से संन्यास ले लेता है तथा एक ट्रस्ट की स्थापना कर गुमनाम हो जाता है।

यादवेन्द्र शर्मा का उपन्यास 'चांदा सेठानी' पीढ़ियो के संघर्षो की कथा है। उपन्यास के पात्र सामाजिक बन्धनों में बंधे हुए दिखाई देते हैं। कुछ पात्र इन बन्धनों को सर्वोपरि मानकर जीवन यापन करना ही अपनी दायत्वि मानते हैं। उसमें कुछ पात्र इन बन्धनों को काटकर अपने मनोइच्छा अनुसार जीने मे ही उचित मानते है। इन्हीं संघर्षो को लक्षित कर लिखा गया उपन्यास है 'चांदा सेठानी'। राजस्थानी परिवेश की यह विशेषता रही है कि पुरुष

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

पैसा कमाने के लिए प्रदेश जाते हैं तथा पीछे राजस्थानी नारियों को त्याग, संयम और धैर्य के साथ रहना पडता है। उपन्यास के केन्द्रित पात्र चांदा सेठानी पुराने और नये मूल्यो, आधुनिकता व परम्परा के द्वन्द से झूझता एक ऐसा वास्तविक चरित्र है। जो परिस्थितियों के साथ समझौता नहीं कर पाता। चांदा सेठानी पहले मारवाडी परम्पराओं को निभाते हुए पति प्रेम न पा सकी और वहीं उसकी बहु सुलोचना परम्परावादी न होकर आधुनिकता के खुले जीवन में जीने वाली स्त्री है, चांदा सेठानी अपनी आधुनिक बहु के व्यवहार से समझौता नहीं कर पाती।

उपन्यास की मूल समस्या है कि राजस्थानी लोग धन कमाने हेतु प्रदेश चले जाते है तो अपने साथ अपनी पत्नी को नहीं ले कर जाते। जब चांदा सेठानी बहु बन कर आई तो उसका पति नारायण धन कमाने के लिए प्रदेश चला गया। और चांदा को अपनी सास जमनी के साथ देश मे ही रहना पड़ा। लेकिन आगे चलकर उसका बेटा दामोदर अपनी पत्नी को शहर ले जाना चाहता है तो चांदा सेठानी को मारवाडी समाज की मर्यादा टूटती नज़र आती है। चांदा सेठानी को लगने लगता है कि उसके हाथों से कुल की मर्यादा नष्ट हो रही है और वह परास्त हो रही है।

कासी जटणी, चांदा सेठानी से कहती है –"पहाड सी जवानी को सीने पर टिकाये आप ने जो कुछ झेला है, इस कलियुग में हर एक के वश की बात नहीं।"[16]

सुलोचना रामली से कहती है –"कम से कम हमारी पीढ़ी में बोलने की हिम्मत तो आई है। अब सास जी मुझे भी उसी नरक की आग में झोंकना चाहती है। जिस आग में वह खुद जली है, वह मुझे अपने पति के साथ कलकत्ता नहीं भेजेगी। क्यों नहीं भेजेंगी ? जब कलकत्ता में पांच–पांच कमरे ले रखे है, केवल इस लिए नहीं भेजेगी क्योंकि वह खुद कलकत्ता नहीं गई थी। पर मैं उनकी बात नहीं मानूंगी। मैं अपने पति के संग रहूंगी। चाहे मुझे कितना ही कष्ट उठाना पड़े। कितने ही ताने सुनने पड़े।"[17]

दामोदर अपनी मां चादां सेठानी को कहता है–"मारवाड़ी समाज के लोग–लुगाइयां अब पहले वाले नहीं रहे है। आप अब कलकत्ता जाकर देखिये। वे अब गद्धियों में अपनी सारी उम्र नहीं बिताते आधे लोग अपनी पत्नियों के साथ परदेश में रहने लगें है।"[18]

दामोदर सुलोचना को कलकत्ता ले जाने को कहता है तो मां चादां सेठानी नाराज़ होकर गृहस्थाश्रम का परित्याग कर कृष्ण की शरण मे मथुरा चली जाती है। इस प्रकार यह उपन्यास दो पीढ़ियों के संघर्ष का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है। यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ने अपने जीवन एंव परिवेश के समाज का मर्म स्पर्शी एंव यथार्थ चित्रण अपने उपन्यासों मे करते हुए बहु आयामी सामाजिक संदर्भ एंव सरोकारों की विवेचना की है। यादवेन्द्र ने सामाजिक सन्दभों मे अपनी क्षमता, प्रतिभा एंव अभिव्यक्ति कोशल से इन उपन्यासों को उभारा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1 डॉ सुरेन्द्र सिंह अत्रीश, यशपाल के कथा साहिब का समाज सापेक्ष अध्ययन, मुजफ्फर नगर (उ.प.) कुसम प्रकाशन, 1986। पृ. 17
2 वहीं – पृ. 18
3 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : नया इन्सान – पृ. –87
4 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : चूजर की पीड़ा – पृ. –15
5 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : जग की रीत – पृ. –30
6 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : विद्रोहणी – पृ. –2
7 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : राहें अलग–अलग – पृ. –11
8 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : गुनाहों की देवी – पृ. –113
9 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : गुनाहों की देवी – पृ. –159
10 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : गुनाहों की देवी – पृ. – 192
11 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : सावित्री – पृ. –47
12 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : वापसी – पृ. – 71
13 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : वापसी – पृ. –77
14 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : वापसी – पृ. –81
15 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : पांव में आंख वाले – पृ. –16
16 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : चांदा सेठानी – पृ. – 2
17 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : चांदा सेठानी – पृ. – 22 –23
18 यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' : चांदा सेठानी – पृ. – 31 –32

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org